SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-02| December- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.33

इक्कीसवीं सदी के बाल उपन्यासों में पर्यावरणीय चेतना

मधुलिका चौधरी[1] एवं प्रो0 राम प्रताप सिंह[2]

[1]शोधार्थी, दयानन्द वैदिक कॉलेज उरई एवं सहायक आचार्य शिया पी0 जी0 कॉलेज,
[2]शोध–निर्देशक, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई।

सारांश

इक्कीसवीं सदी में उपभोगवादी मानसिकता के चलते निरन्तर पर्यावरण को क्षति पहुँचाई जा रही है। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, नदी–तालाब और जंगल व पहाड़ कोई भी मनुष्य की उपभोगवादी दृष्टि से बचे नहीं हैं। विज्ञान हमें ग्लोबल वार्मिंग के प्रति सचेत कर रहा है। ऐसे में साहित्यकारों की कलम इन विषयों पर चलना अत्यन्त स्वभाविक है। बाल मन में यदि पर्यावरण की समस्याओं और उनके समाधान को अच्छी तरह से स्थापित कर दिया जाए तो यही बच्चे आगे देश और समाज की इस संरचना को बचाने और उन्हें पुनः स्थापित करने का भगीरथ प्रयास कर सकते है। इस विचार के प्रकाश में साहित्य की विविध विधाओं के साथ बाल उपन्यास में पर्यावरणीय चेतना विकसित करने के सुन्दर प्रयास हुए हैं।

यदि हम बाल उपन्यासों पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो हम देखते हैं कि विनायक, उषा यादव, देवेन्द्र तथा विमला भण्डारी जैसे लेखकों ने अपने उपन्यासों में बड़े ही आकर्षक ढंग से न केवल बाल समस्याओं को रूपायित किया है बल्कि पर्यावरणीय समस्या और उनके समाधानों को बड़े सरल व सहज ढंग से शब्दों में पिरोते हुए विविध पात्रों के माध्यम से बाल मन में पर्यावरणीय चेतना को विकसित करने का सराहनीय प्रयास किया है। बाल साहित्य की सभी विधाओं में से उपन्यास ने भी बड़ी तत्परता और जागरूकता के साथ पर्यावरण जैसी गम्भीर समस्या को बालकों के समक्ष प्रस्तुत करने में बड़ा योगदान दिया है। बाल साहित्य को यदि हम पर्यावरण संरक्षण की पहली पाठशाला बना लें तो आने वाला भविष्य बेहतर हो सकता है।

मुख्य शब्द–पर्यावरण, बाल साहित्य, बाल उपन्यास, जंगल, बालक, साहित्यकार, मनोरंजन।

प्रस्तावना– बाल साहित्य बालकों का मनोरंजन करने के साथ–साथ उनकी रूचियों, क्षमताओं व बौद्धिकता का भी विकास करता है, बालकों को सुसंस्कृति, सामाजिक एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाने में बाल साहित्य का

बड़ा योगदान है। पर्यावरण का विषय बाल साहित्य के लिए कोई नया नहीं है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि लगभग सभी विधाओं में पर्यावरण विषय किसी न किसी रूप में देखने को मिल जाता है। आधुनिकता के इस दौर में जहाँ विज्ञान व तकनीकी अपने चरम पर है वहाँ पर्यावरण के विषय में बालकों को जागरूक करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि बालक ही हैं जो हमारे भविष्य की नींव हैं वही भविष्य में आने वाली पर्यावरणीय समस्याओं से मानव जाति को बचा सकते हैं।

प्रारम्भ से ही बाल उपन्यासों ने सामाजिक, ऐतिहासिक व मनोवैज्ञानिक के साथ पर्यावरणीय समस्याओं से बालकों को रूबरू कराया है।

''उपन्यास एक विधा से ज्यादा सामाजिक चेतना का मंच है जो किसी विषय को सच्चाई की समग्रता से व्याख्यांकित करता है।''

इक्कीसवीं सदी के बाल उपन्यासों में पर्यावरणीय चेतना एक प्रमुख मुद्दा बनकर उभरी है। आज का बाल उपन्यास पारम्परिक विषयों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अब यह पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जल प्रदूषण व जैव विविधता संकट जैसे गम्भीर मुद्दों पर बालकों को जागरूक करने का कार्य कर रहा है, पेड़–पौधों व जीव–जन्तुओं के प्रति बालकों में संवेदना जगाकर उनके संरक्षण का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है।

''इक्कीसवीं शताब्दी में बाल उपन्यासों की एक बार फिर पड़ताल शुरू हुई। सूचना क्रान्ति, बिगड़ते पर्यावरण, भूमण्डलीकरण और बदलते परिवेश ने बाल साहित्यकारों को नए–नए विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित किया।''

विषय विस्तार–

हमारे पर्यावरण को सुरक्षित रखने में सबसे बड़ा योगदान जंगलों का है, जंगल तथा उसमें रहने वाले जीवों के महत्व को बालकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए बाल उपन्यासकारों ने अथक प्रयास किए हैं। इन उपन्यासकारों में प्रमुख नाम विनायक जी का है। इनके उपन्यास 'नदियाँ और जंगल' में शिकारियों द्वारा जंगल को बरबाद करने की घटना का वर्णन है, विनायक जी ने अपने उक्त उपन्यास में दिखाया है कि किस प्रकार शिकारी लालचवश जंगली जानवरों का शिकार करते हैं जिससे जंगल का पारिस्थितकी तंत्र बिगड़ जाता है और जंगल खतरे में पड़ जाता है। इस उपन्यास में जंगली जानवरों के बीच खतरे के समय एकता और परस्पर सहयोग की जो भावना भी दिखती है उसका सुन्दर वर्णन मिलता है। इस उपन्यास की रोचक शैली के कारण बच्चे न केवल जंगल से परिचित होते हैं बल्कि जंगल के महत्व को भी समझते हें। आपके अगले उपन्यास 'चाची और चुनौतियाँ' में एक नन्हीं सी चींटी के हौसले और हिम्मत की कथा है। मानव के द्वारा जंगल और उसके जानवरों पर किए जाने वाले अत्याचारों से परेशान होकर सभी जंगली जानवर एकजुट होकर मनुष्यों पर हमला करने चल देते हैं और उनका मार्गदर्शन चाची नाम

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

की एक चींटी करती है। सभी जानवरों की मृत्यु गोलियों व अन्य हथियारों द्वारा होने के साथ उपन्यास का अत्यन्त मार्मिक अन्त हो जाता है।

यह वस्तुतः खत्म होते जंगल और विलुप्त होते जानवरों के चित्रण के माध्यम से पर्यावरणीय क्षति से होने वाली भयावह स्थितियों को बड़ी सक्षमता से प्रस्तुत करने में एक समर्थ कृति है। इसके अतिरिक्त 'चरखी का बेटा', 'नदी किनारे वाली चिड़िया' तथा 'पानी बरसने वाला है' भी विनायक जी के द्वारा रचित जंगल व उसके जीवों पर आधारित उपन्यास हैं। प्रबोध कुमार गोविल जी का उपन्यास 'उगते नहीं उजाले' भी जंगली जानवरों की कथा पर आधारित है।

''पर्यावरण एवं पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम को लेकर भी सुंदर बाल उपन्यासों की सर्जना हुई है। उषा यादव का 'सोना की आंखें' हिरनों की घटती संख्या पर बच्चों की चिंता को जताने के साथ स्थिति को सुधारने के लिए उनका कृतसंकल्प हो उठना और अंततः अपने 'मिशन' में सफल होना दिखाता है। शमशेर अहमद खान का 'पापा का उपहार' पर्यावरण की शुद्धता और पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों से प्यार करने की बात कहता हैं।''

विमला भण्डारी जी का 'सुनेहरी और सिमरू' भी वन्य जीवों पर केन्द्रित बाल उपन्यास है, यह बालकों को वन्य जीवों से प्रेम करने की प्रेरणा देता है। जगदीश तोमर का पशु–पक्षियों पर आधारित बाल उपन्यास 'मंगल वन' बालकों के लिए विविध रूप से शिक्षाप्रद हैं। इस उपन्यास को पढ़कर बालक वनों व वन्य जीवों के प्रति संवेदना महसूस करते हैं और जीवन में इनके महत्व से भी रूबरू होते हैं। इस कड़ी में अगला उपन्यास है कल्याण सिंह का 'डायनासोर और सिंह'। इसमें जंगली जानवरों के माध्यम से बालकों को विभिन्न प्रकार की भावनाओं सुखःदुख आदि से परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

''पर्यावरण सम्बन्धी बाल उपन्यास बच्चों में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाते हैं। इस प्रकार के उपन्यासों में पर्यावरण की रक्षा और संवर्द्धन, पोषण और पुष्टि उसकी शुद्धि और पवित्रता का संदेश निहित रहता है।''

पर्यावरणीय चिन्ता को लेकर उपन्यास लिखने वालों में एक बड़ा नाम है उषा यादवजी। इनके उपन्यास 'फिर से हंसो धरती माँ' में पर्यावरण प्रदूषण तथा ग्लोबल वार्मिंग जैसी गम्भीर समस्या को बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। 'नाचें फिर जंगल में मोर' भी उषा जी का पर्यावरणीय समस्या पर केन्द्रित उपन्यास है।

पर्यावरण तथा उसकी समस्या पर लेखनी चलाने वालों में देवेन्द्र कुमार का एक विशिष्ट स्थान है। ''देवेन्द्र का सबसे सशक्त उपन्यास है– 'चिड़िया और चिमनी', जो आज की पर्यावरण की समस्या को इतनी संजीदगी से उठाता है कि उससे बाल उपन्यास को एक नई शक्ति ही नहीं, बल्कि एक अलग पहचान और अर्थवत्ता भी मिल जाती है।''

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

फैक्ट्री से निकलने वाला जहरीला धुआँ जानवरों व इंसानों सभी की सेहत के लिए खतरा है। इस उपन्यास के द्वारा देवेन्द्र जी ने बालकों को समस्या के वाजिब हल प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया है जैसे कि फैक्ट्री के चिमनी पर कोई ऐसा यंत्र लगा दिया जाए कि नुकसान पहुँचाने वाले रसायन नीचे ही रह जाएं सिर्फ गर्म हवा चिमनी से बाहर निकले। 'अधूरा सिंहासन' भी देवेन्द्र जी का पर्यावरण की समस्या पर आधारित बाल उपन्यास है। इसमें पर्यावरण की रक्षा करने वाली एक रानी देवयानी की कहानी है।

इसके अतिरिक्त जल प्रदूषण व जल संरक्षण जैसे विषयों को भी बाल उपन्यासकारों ने सजगता से बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। कामना सिंह के बाल उपन्यास 'पानी है अनमोल' में पानी के महत्व तथा उसकी कमी से होने वाली समस्याओं पर बालकों को जागरूक किया गया है। इस उपन्यास का नायक शुभम अपने दादाजी के विरोध में खड़ा हो जाता है क्योंकि उसके दादाजी जी तालाब के ऊपर शापिंग कॉम्पलेक्स बनवाना चाहते हैं। निश्चित रूप से कामना सिंह का ये उपन्यास बालकों को समाधान की तरफ विचार करने की एक दृष्टि प्रदान करता है।

इसी प्रकार एक और बाल उपन्यास 'बीनू का सपना' का भी उल्लेख आवश्यक है। अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' जी के इस बाल उपन्यास में बालक बीनू के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण तथा उसकी वजहों पर बालकों का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। कक्षा में जब बीनू को पर्यावरण का पाठ पढ़ाया गया तब उसने अधिक गौर नहीं किया परन्तु गाँव में जब उसने नदियों तथा आस–पास के वातावरण को देखा तब वह स्थिति की गम्भीरता को समझ पाया।

पर्यावरण तथा जीव–जन्तुओं की समस्याओं पर आधारित कुछ अन्य उपन्यास हरिकृष्ण देवसरे कृत 'सुरखाब के पर', जगदीश तोमर के द्वारा रचित 'पुराना किला', आर० पी० शुक्ला कृत 'चीची और चीकू', श्री प्रसाद कृत 'बगुला और केकड़ा', श्री निवास वत्स जी द्वारा रचित 'गुल्लू और एक सतरंगी' स्वदेश कुमार कृत 'हार्थियों के घेरे में' तथा मोहम्मद साजिद खान द्वारा रचित 'गांव की तस्वीर' आदि हैं।

निष्कर्ष–

बालक स्वभाव से अत्यंत संवेदनशील होते हैं, उनके समक्ष कोई समस्या आती है तो वे उसके बारे में सोचते भी हैं और हल निकालने का प्रयत्न भी करते हैं। इसलिए बाल साहित्यकारों पर ये बड़ी जिम्मेदारी है कि वे आज के युग तथा भविष्य में आने वाली समस्याओं को बालकों के समक्ष प्रस्तुत करें। कुछ बाल साहित्यकारों ने इस ओर ध्यान दिया है परन्तु भविष्य की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए इन विषयों पर अधिक से अधिक बाल उपन्यासों की रचना होनी चाहिए। बाल उपन्यास के पात्र शुभम ने जैसे जल स्त्रोत के महत्व को समझा और उसको नष्ट होने से भी बचाया तथा बीनू ने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को समझ करके पेड़ लगाए और जल स्रोतों को स्वच्छ करने का प्रयत्न किया वो बालकों के लिए प्रेरणादायक है।

निश्चित रूप से संतोष का विषय है कि इक्कीसवीं सदी में रचे जा रहे बाल उपन्यास न सिर्फ बालकों का मनोरंजन करते है बल्कि उन्हें तमाम सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं से रूबरू कराते हुए उनके समाधान का एक रास्ता भी बताते चलते हैं। वस्तुतः यह साहित्य न केवल बच्चों में बल्कि बड़े लोगों में भी जागरूकता पैदा करने में सक्षम हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

- '21वीं सदी का बाल साहित्य, डॉ सोनाली निनामा (सिसोदिया), पृष्ठ –77
- बाल साहित्य उपलब्धि और संभावना, सम्पादक–महेश्वर, पृष्ठ–53।
- हिन्दी बाल साहित्य और बाल विमर्श, संपादक– उषा यादव, राजकिशोर सिंह, पृष्ठ–221
- 21वीं सदी का बाल साहित्य, डॉ0 सोनाली निनामा (सिसोदिया), पृष्ठ–86
- हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास, प्रकाश मनु, पृष्ठ–296

Cite this Article:

मधुलिका चैधरी एवं प्रो0 राम प्रताप सिंह,“ इक्कीसवीं सदी के बाल उपन्यासों में पर्यावरणीय चेतना” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 02, pp.240-244, December 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

मधुलिका चौधरी[1] एवं प्रो० राम प्रताप सिंह[2]

For publication of research paper title

इक्कीसवीं सदी के बाल उपन्यासों में पर्यावरणीय चेतना

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-02, Month December 2025, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.33